इकाई 3 पुरापाषाण और मध्यपाषाण संस्कृतियाँ*

इकाई की रूपरेखा

3.1 उद्देश्य

3.2 प्रस्तावना

3.3 पुरापाषाण संस्कृतियाँ

3.3.1 पुरापाषाण समाज में लिंग आधारित श्रम विभाजन पर दृष्टिपात

3.3.2 निम्न पुरापाषाण संस्कृतियाँ

3.3.3 मध्य पुरापाषाण संस्कृतियाँ

3.3.4 उत्तर पुरापाषाण संस्कृतियाँ

3.3.5 कलात्मक अभिव्यक्तियाँ

3.4 मध्यपाषाण संस्कृतियाँ

3.4.1 पर्यावरण संबंधी बदलाव

3.4.2 सूक्ष्मपाषाण औज़ार

3.4.3 जीवन निर्वाह का तरीका और सामाजिक जटिलता

3.4.4 यूरोप में मध्यपाषाण संस्कृतियाँ

3.4.5 स्कैंडिनेविया और ब्रिटेन में मध्यपाषाण संस्कृतियाँ

3.4.6 दक्षिण पश्चिम एशिया में मध्यपाषाण संस्कृतियाँ

3.5 सारांश

3.6 शब्दावली

3.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

3.8 संदर्भ ग्रंथ

3.9 शैक्षणिक वीडियो

3.1 उद्देश्य

इस इकाई में **पुरापाषाण** और **मध्यपाषाण** संस्कृतियों को विश्व परिप्रेक्ष में देखा गया है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपः

- पुरापाषाण और मध्यपाषाण का अर्थ समझ सकेंगे,
- इस काल की औज़ार तकनीकी को पहचान पाएँगे,
- इस काल से जुड़े स्थानों से संबधित उपयुक्त उदाहरण देने में सक्षम होंगे,
- इस काल के सांस्कृतिक स्वरूपों की विशेषताएँ बता सकेंगे, और
- विकास की प्रक्रिया के रूप में पुरापाषाण और मध्यपाषाण काल की संस्कृतियों का विवरण दे सकेंगे।

3.2 प्रस्तावना

मनुष्यों के क्रमिक विकास की गाथा उनके सांस्कृतिक विकास से जुड़ी है। ब्रिटिश

* डॉ. शतरूपा भट्टाचार्य, लेडी श्रीराम कालेज फॉर वुमन, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

पुरातत्वशास्त्री इयान होडर (2016) के अनुसार, औज़ार निर्माण और अन्य भौतिक संस्कृतियों के साथ मानव संबंध उनके जैविक और संज्ञानात्मक विकासमूलक परिवर्तनों में योगदान देते हैं। इसी प्रकार, विलियम आंद्रेफस्की जूनियर (2009) कहते हैं कि पाषाण तकनीकियों और उनके बनाने के तरीके, उत्पादन, पुनः प्रयोग और त्याग देने की प्रक्रिया, हमें घुमंतु समाजों की ग्राह्य रणनीतियों के बारे में बताते हैं। अक्सर, पत्थर के औज़ार प्रागैतिहासिक मानव के जीवन पर प्रकाश डालने वाले एकमात्र पुरावशेष हैं जो समय की अनिश्चिताओं के सामने टिक पाये। प्रारंभिक पुरावशेषों के महत्व को समझने के लिए, दुनिया भर में अस्तित्व में आई सभ्यताओं के विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक स्वरूपों, औज़ार संस्कृति से लेकर कला रूपों की चर्चा इस इकाई में की गयी है, हालांकि यहाँ चर्चा का केन्द्र यूरोप और पश्चिम एशिया है।

प्रारंभिक मानव की कहानी उनके उन कार्यकलापों से जुड़ी है जिसके सहारे उन्होंने अपने परिवेश को बदलना और पर्यावरण के साथ संपर्क बनाना शुरू किया। जिन्दा रहने और औज़ार निर्माण की योग्यता ने प्रारंभिक सांस्कृतिक परिवर्तनों को दिशा दी। जैसा कि इस पाठ्यक्रम की **इकाई 2** (मानव का जैविक विकास) में आपने देखा कि *होमो* प्रजाति 25 लाख साल पहले प्रकट हुई और इसके साथ ही पत्थर के औज़ार भी प्रारंभ हुए। औज़ारों को मानव-निर्मित वस्तुओं के रूप में पहचाना गया है जिनका इस्तेमाल शारीरिक श्रम करने में होता था। औज़ार सांस्कृतिक परिवर्तनों के सबसे महत्वपूर्ण साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं। **फलक** तकनीक (flaking: एक बड़े पत्थर को छील कर छोटे टुकड़ों में बदलना) के सहारे औज़ारों को एक विशेष आकार दिया जाता था ताकि विभिन्न कार्यों में इसका इस्तेमाल किया जा सके। औज़ारों के आकार और इस्तेमाल की विशिष्टताओं ने विभिन्न संस्कृतियों के महत्वपूर्ण आपसी अंतरों को जन्म दिया। इसके अतिरिक्त, ग्राह्य क्षमता उत्तरजीविता का एक महत्वपूर्ण तरीका था। जिसने प्रारंभिक मानव के प्रसार और विकास को सुनिश्चित किया। मानव की कहानी शिकार और भोजन संग्रहण के लिए सरल औज़ार बनाने और इसके साथ होने वाले उन असंख्य परिवर्तनों से शुरू होती है, जिन्होंने मानवता के इतिहास को बदलकर रख दिया।

इतिहासकार, मानवविज्ञानी, पुरातत्त्वविदों और भौतिकविदों ने मानव के सांस्कृतिक विकास को समझने और समझाने के लिए कई सिद्धांत प्रस्तावित किये हैं (*हिस्ट्री ऑफ़ ह्यूमैनिटीज़,* भाग 1, 1996)। उदाहारण के लिए, सी.जे. थॉम्सन ने, प्रागैतिहासिक संस्कृतियों के तीन-स्तरीय वर्गीकरण का सुझाव दिया, जो निम्नलिखित हैं:

क) प्रारंभिक पुरापाषाण काल खाद्य-संग्रहण के चरण का प्रतिनिधित्व करता है,

ख) उत्तर पुरापाषाण काल संगठित शिकार और चुनिन्दा संग्रहण के चरण के रूप में सामने आता है, और

ग) नवपाषाण काल खाद्य उत्पादन का चरण है।

दूसरी तरफ, एस. नीलसन ने जंगली, शिकारी या ख़ानाबदोश, कृषक और सभ्यता के चरणों के आधार पर विकास के चार चरणों को प्रतिपादित किया है। एडवर्ड टेलर के अनुसार, मनुष्यों में सामान्य बुद्धि और तर्कसंगत व्यवहार था जिसने उनके सांस्कृतिक विकास को दिशा दी। उन्होंने मनुष्यों के सांस्कृतिक विकास के तीन चरणों का उल्लेख किया है: क्रूरता, बर्बरता, और सभ्यता। अमेरिकी मानवशास्त्री, लुईस एच. मॉर्गन (*हिस्ट्री ऑफ़ ह्यूमैनिटी,* भाग 1, 1996) का मानना है कि मानव का सामाजिक विकास पर्यावरण संबंधी तनावों के अनुसार खुद को ढालने की उनकी क्षमता में निहित है। इस आधार पर उन्होंने विकास को सात चरणों में वर्गीकृत किया है, जो बर्बरता के निम्नतम चरण से शुरू होकर सामान्य खाद्य-संग्रहाक चरण से होते हुए सभ्यता के चरण को उस समय प्राप्त करता है जब समाज में लेखन कला का विकास होता है।

3.3 पुरापाषाण संस्कृतियाँ

'Palaeolithic' शब्द दो यूनानी शब्दों से बना है: *palaios* का अर्थ 'पुराना' और *lithos* का अर्थ 'पत्थर' है और इसका उपयोग '**पुरापाषाण काल**' को इंगित करने के लिए किया जाता है। यह शब्द 1865 में पुरातत्त्ववेत्ता जॉन लब्बॉक द्वारा चलन में लाया गया और इसका प्रयोग लगभग 25 लाख वर्ष पहले प्रागैतिहासिक काल के लिए किया जाता था जब मनुष्यों ने पत्थर के औज़ार बनाने शुरू किए।

होमो हैबिलिस से *होमो सेपियन्स* तक मानव के विकास की एक लंबी प्रक्रिया है, जिसे आपने जैविक परिवर्तनों से सम्बंधित **इकाई 2** में सीखा। विकास को प्रभावित करने वाले परिवर्तन सिर्फ जैविक नहीं वरन् सांस्कृतिक भी थे। प्रारंभिक मनुष्यों के विकास में सांस्कृतिक परिवर्तनों की भी एक प्रमुख भूमिका थी। इस संदर्भ में जब हम सांस्कृतिक परिवर्तनों का जिक्र करते हैं, तो हम न केवल पत्थर के औज़ारों का निर्माण और उनके सामयिक विकास का, बल्कि पर्यावरण के बदलाव और संसाधनों की उपलब्धता का जिक्र भी करते हैं जिसमें शिकार की रणनीतियाँ, संचार के तरीके, आग को नियंत्रित करने, औज़ार बनाने और संशोधित करने की क्षमता, निर्वाह के स्वरूप, शवाधान के तरीके, चित्रकला आदि शामिल हैं।

औज़ारों के उत्पादन का उनकी उपयोगिता से निकट का रिश्ता है। यह अधिकतर उस काल की निर्वाह रणनीति से जुड़ा होता है। शोधार्थियों के लिए यह बहस का मुद्दा रहा है कि किस हद तक शिकार अर्थव्यवस्था का आधार था। क्या हम शुरुआती मानव को शिकारी या शिकारी-संग्रहकर्ता के रूप में या संग्रहकर्ता के रूप में पहचान सकते हैं? और क्या हम औज़ारों के साथ-साथ जीवाश्म रिकॉर्ड के मामले में पाए गए सबूतों के आधार पर इन संस्कृतियों में श्रम के लिंग आधारित विभाजन के बारे में बात कर सकते हैं?

3.3.1 पुरापाषाण समाज में लिंग आधारित श्रम विभाजन पर दृष्टिपात

बहुत लंबे समय तक 'शिकार की परिकल्पना' सबसे स्वीकार्य सिद्धांत था जिसके अनुसार शिकार जीवन जीने का एक तरीका था और इसे पुरुष प्रधान गतिविधि के रूप में समझा जाता था। शिकार को सर्वप्रमुख आर्थिक प्रयास के रूप में चित्रित किया गया था और यह माना जाता था कि भोजन की व्यवस्था करना और उसे आपस में बांटने पर पुरुषों का नियंत्रण था। ऐसा माना जाता था कि पुरुष नेता और 'प्रभारी' होते थे और महिलाओं और बच्चों पर नियंत्रण रखते थे। यह माना जाता था कि महिलाओं का उत्तरदायित्व, उनकी प्रजनन क्षमताओं के कारण, मातृत्व कार्यों और देखभाल करने तक सीमित था और जिनकी गतिविधियां आधार क्षेत्र के अन्दर ही सीमित थीं।

दूसरी तरफ, पुरुषों पर शिकार करने और भोजन उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी थी – एक संगोष्ठी में रिचर्ड बी. ली और आई. देवोर (1968) ने 'मैन द हंटर' की अवधारणा के साथ शुरुआत की और बाद में यही उनकी पुस्तक का शीर्षक बना। नैन्सी टैनर, ए. जिह्लमैन (1978) और अन्य विद्वानों ने लैंगिक ध्रुवीकरण पर आधारित इन सिद्धांतों की कड़ी आलोचना की और प्रागैतिहासिक समाजों में लिंग आधारित श्रम विभाजन की धारणा का खंडन किया। उनका मानना था कि शिकार केवल अवसरवादी जरुरत था। उनके अनुसार, अजीर्ण औज़ारों और उनके कार्यों से पता चलता है कि शिकार शुरुआती मानव की मुख्य आर्थिक गतिविधि नहीं थी, बल्कि वे संग्रहकर्ता थे। ये विद्वान इस धारणा पर सवाल करते हैं कि क्या सभी महिलायें माँ थीं? और तर्क देते हैं कि प्रसव आधारित श्रम विभाजन की धारणा भ्रामक है। कई मानववैज्ञानिक अध्ययनों से पता चलता है कि महिलाओं ने शुरुआती समय में औज़ार निर्माताओं के रूप में काम किया था। उदाहरण के लिए, नारीवादी पुरातत्वविदों में अग्रणी जोआन गेरो (कैथ्रीन डब्ल्यू आर्थर, 2010 में उद्धृत) का तर्क है कि प्रागैतिहासिक महिलायें

अवश्य ही औज़ार-निर्माता रही होंगी क्योंकि उन्हें कई तरह के कार्यों को करने के लिए फलक औज़ारों की आवश्यकता होती थी। मानवविज्ञान के अध्ययनों से पता चलता है कि अधिकतर संग्राहक समाजों में महिलायें खाद्य उत्पादन प्रक्रियाओं के एक बड़े हिस्से में अपना योगदान देती थीं। इसके अलावा, कई समाजों में महिलायें, अकेले अथवा पुरुषों के साथ, शिकार पर निकल जाती थीं। एक प्रकार से प्रागैतिहासिक समाजों में संग्रहण लिंग आधारित श्रम विभाजन को चुनौती देता है।

इन विद्वानों के तर्कों को आगे बढ़ाने के लिए संग्रहण परिकल्पना दी गई जिसके अनुसार प्रागैतिहासिक काल में पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं ने एक केन्द्रीय भूमिका निभाई थी। यह सिद्धांत बताता है कि महिलाओं ने पेड़-पौधों से प्राप्त भोजन के संग्रहण और प्रक्रमण के लिए औज़ारों का उपयोग किया। वे तर्क देते हैं कि संग्रहण भी एक महत्वपूर्ण गतिविधि थी और इसे कम उत्पादक 'महिलाओं के काम' या कम उत्पादक काम के रूप में पेश नहीं किया जा सकता। हालांकि, यह परिकल्पना शुरुआती समाजों में लिंग आधारित श्रम विभाजन की उपस्थिति को स्वीकार करती है। ए. जिह्लमैन (1978) जैसे विद्वानों का मानना है कि मानव जीवन का तरीका श्रम के लिंग विभाजन पर आधारित नहीं था, बल्कि एक ऐसी प्रणाली पर आधारित था जहां पुरुष और महिलाएं एक शिकारकर्ता के रूप में व्यवहारिक लोचकता के साथ एकत्रण और शिकार कार्य में संलग्न होते थे जो प्रारंभिक मानव (होमिनिडों) के अस्तित्व का प्रमुख कारक था। एक तरह से प्रारंभिक समाज के अस्तित्व के लिए दोनों का योगदान समान रूप से जरुरी था।

3.3.2 निम्न पुरापाषाण संस्कृतियाँ

पुरापाषाण संस्कृति को औज़ारों की प्रगति, सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों, बसावट के पटैर्न तथा अन्य मानदंडों के आधार पर तीन कालों में बांटा गया है। यह निम्न पाषाण संस्कृति से शुरू होती है जिसके बारे में हम इस उप-भाग में चर्चा करेंगे।

ब्रायन फेगन (2014) चार मानदंडों की चर्चा करते हैं जिसके आधार पर 'मानव' को परिभाषित किया जाता है। पहला, मस्तिष्क का आकार जो 600 घन सेंटीमीटर से अधिक होना चाहिए। दूसरा, भाषा की समझ, जिसे मस्तिष्क के अन्दर पाये गए पैटर्न्स के आधार पर पहचाना जा सकता है। तीसरा, एक मानव की तरह सटीक पकड़ और मुड़ सकने वाला अंगूठा। और चौथा, औज़ार निर्माण की क्षमता।

प्रागैतिहासिक काल के वो पहले 'मानव' कौन थे जिन्होंने औज़ार निर्माण सीखा यह अब तक एक पहेली है। इस मामले में 25 लाख साल पहले मनुष्यों की एक प्रजाति जिन्हें *ऑस्ट्रैलोपिथिकस गर्ही* कहा जाता है, एक दिलचस्प खोज है। इस प्रजाति के मस्तिष्क का आकार प्रारंभिक मनुष्यों का एक तिहाई था और वो वानर की तरह दिखते थे। लेकिन *आस्ट्रैलोपिथिकस गर्ही* के जीवाश्मों के पास पाए गए हिरण और चिकारा की हड्डियों पर पत्थर के औज़ारों के प्रहार के निशान पाए गए। लेकिन ऐसा कोई औज़ार अभी तक नहीं मिला है जिसे प्राथमिक औज़ार निर्माता की पहचान के पुख्ता सबूत की तरह इस्तेमाल किया जा सके। हालांकि, इस बात के कुछ सबूत मिले हैं जो इस बात की ओर इशारा करते हैं कि प्रारंभिक मनुष्य प्रजातियाँ मांसाहारी थीं और उन्होंने पत्थर के कुछ औज़ारों का उपयोग सीख लिया था जिसने मानव विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

25 लाख साल पुराने *होमो हैबिलिस* द्वारा निर्मित औज़ार पाए गए हैं जो साधारण और अपरिष्कृत थे। उनके साथ जुड़ी तकनीक को ओल्डोवान टूल तकनीकी कहा जाता है, जिसका नाम तंजानिया में ओल्डुवाई गॉर्ज के नाम पर रखा गया है, जहां यह औज़ार पहली बार खोजे गए थे। काटने वाला गंडासा सबसे शुरुआती औज़ार माना जाता है। ये आमतौर

पर प्रहार विधि (यानी एक वस्तु का दूसरे पर प्रहार) द्वारा बनाए जाते थे, आमतौर पर लावा के छोटे पत्थरों को आपस में टकराया जाता था। इस प्रकार उत्पादित फलक (खंडित पत्थर के छोटे, पतले टुकड़े) लंबे और तेज होते थे जिनका इस्तेमाल खुरचने और काटने वाले औज़ार बनाने के लिए किया जाता था जिनसे लकड़ी, पौधों, त्वचा और मांस को काटा या खुरचा जाता था।

निकोलस टोथ (*हिस्ट्री ऑफ़ ह्यूमैनिटी*, 1996) ने तर्क दिया है कि प्रथम औज़ार निर्माताओं को औज़ार की क्षमता, साथ ही औज़ार तकनीकी की यांत्रिकी की स्पष्ट समझ थी। औज़ार बनाने के लिए हाथों और आँखों में एक अच्छे समन्वय की आवश्यकता तथा एक औज़ार को आकार देने के लिए पत्थरों में तीव्र कोणों को पहचानने और मानसिक प्रसंस्करण की क्षमता होनी चाहिए। इस प्रकार पत्थर में आकार और किनारों से यह पहचानना संभव हो जाता है कि इसे प्रारंभिक मानव द्वारा एक औज़ार के रूप में तैयार किया गया था। डी. स्ट्रॉउट (2011) ने दर्शाया है कि ओल्डोवान औज़ार जैसी सरल शिल्पकृति में भी एक जटिल विधि शामिल थी जिसमें कच्चे माल का सावधानीपूर्वक चयन किया जाता था, इसके बाद फलक उत्पादन और फिर फलक का पृथक्करण किया जाता था। इसके बाद, प्रहार विधि के इस्तेमाल से औज़ारों का उत्पादन किया जाता था।

चित्र 3.1: पत्थर का गंडासा ओल्डोवान
साभार: जोसे-मैनुअल बेनिटो अलवारेज, 2007
स्रोत: https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/a/a7/Oldowan_tradition_ chopper.jpg

ओल्डोवान तकनीक ही औज़ार बनाने की एकमात्र ऐसी तकनीक थी जो 10 लाख साल से ज्यादा चलन में रही। 'नैपिंग' शब्द फलकों को कोर से हटाने और 'डेबिटेज' शब्द अपशिष्ट पदार्थों के लिए इस्तेमाल किया गया है। सबसे पुराना कोर सरल एकध्रुवीय (एकल) कोर था जिसमें से एक या दो फ्लेक्स हटा दिए गए थे। बाद के प्रारंभिक मानव अधिक जटिल लेवलोइस तकनीक का इस्तेमाल करने लगे जिसमें पूर्वनिर्धारित आकार और माप के फलक को हटाया जा सकता था। सबसे शुरुआती कोर को आमतौर पर गुटिका-औज़ार (pebble-tool) कहा जाता था।

औज़ार उपयोग पर हाल के शोध से पता चलता है कि ओल्डोवान औज़ार शिकार के लिए नहीं थे और पौधों और जानवरों को काटने या छीलने में उपयोगी थे। वे ज्यादातर शवों के

प्रक्रमण, खाल उतारने, जोड़ों और मांस खोलने, और हड्डियों को खोलने के लिए तोड़ने के लिए इस्तेमाल किए जाते थे। ओल्डोवाई जॉर्ज और कूबी फोरा (उत्तरी केन्या में झील तुर्काना के नजदीक) दोनों स्थानों पर बड़ी संख्या में जानवरों की हड्डियों और औज़ारों को एक साथ एक छोटे से क्षेत्र में केंद्रित पाया गया है। अन्य परभक्षियों की उपस्थिति के साथ, इस चरण में आग या पालतू जानवरों की खोज की अनुपस्थिति और उन स्थानों पर औज़ारों के साथ-साथ जानवरों की हड्डियों का पाया जाना इस बात की ओर इशारा करता है कि प्रारंभिक होमिनिड्स अक्सर मांस के लिए अवसरवादी संग्रहण पर निर्भर करते थे और यदा-कदा मांस की खोज में घूमते थे।

स्टीवन मिथेन (1995) का मानना है कि प्रारंभिक मनुष्यों की संज्ञानात्मक या सीखने और समझने की क्षमता महत्वपूर्ण थी। यह उनके आसपास के वातावरण को समझने में मदद करती थी। इन परिवर्तनों के साथ सामाजिक बुद्धि भी विकसित हुई होगी, जिसे निर्वाह पैटर्न, औज़ार बनाने आदि के संदर्भ में देखा जा सकता है। मानवविज्ञानी रॉबिन डनबर (फेगन, 2014 में उद्धृत) ने तर्क दिया है कि *होमो हैबिलिस* अवश्य ही समूहों में रहते होंगे, क्योंकि यह उत्तरजीवी रहने की एक आवश्यक रणनीति थी। जी. क्लार्क (फेगन, 2014 में उद्धृत) सुझाव देते हैं कि उन्होंने शायद समर्थित शाखाओं के साथ पत्थर की संरचना द्वारा किसी प्रकार का आश्रय बनाया होगा। संचार कौशल इस अवधि से जुड़ा एक और विकास है। वे संवाद करने के लिए अवश्य ही गुर्राहट और इशारों का उपयोग करते होंगे। दूसरों के साथ बातचीत करने की क्षमता ने अन्य जटिल सामाजिक बातचीत के लिए मार्ग प्रशस्त किया होगा, जिसने उनकी संज्ञानात्मक क्षमताओं की वृद्धि में योगदान दिया होगा।

होमो इरेक्टस का आना सिर्फ जैविक परिवर्तनों से नहीं बल्कि औज़ार तकनीक में हुए महत्वपूर्ण परिवर्तनों से भी जुड़ा है। ये शुरुआती मनुष्य एश्युलियन औज़ार प्रौद्योगिकी से जुड़े थे, जिसका नाम फ्रांस के सेंट एश्युल स्थान के नाम पर रखा गया है। इस तकनीक में दोधारी औज़ार शामिल थे जिसमें दोनों पक्षों पर फ्लेकिंग (flaking) की गई थी और ये औज़ार अधिक नुकीले और बेहतर थे। वे बहुउद्देश्यीय औज़ार थे, जिनका उपयोग लकड़ी के काम करने, खाल निकालने के साथ-साथ जानवरों को काटने के लिए भी किया जाता था। इसके साथ ही हस्त-कुल्हाड़ी और क्लीवर या मांस काटने वाले बड़े चाकू जैसे औज़ार पहली बार सामने आते हैं और बहुत उपयोगी साबित होते होंगे क्योंकि उन्हें कई बार तेज किया जा सकता था। पशुओं की चीरफाड़ करने और बड़े पशुओं के शिकार के साक्ष्य बॉक्सग्रोव (वेस्ट ससेक्स, इंग्लैंड), और एम्ब्रोना और टोर्रल्बा (मध्य स्पेन) जैसी जगहों पर पाए गए हैं। एम्ब्रोना और टोर्रल्बा में, अपरिष्कृत हस्त-कुल्हाड़ी, बड़े चाकू, खुरचनी और काटने के औज़ार भी पाए गए हैं। साक्ष्य इंगित करते हैं कि हाथी, गैंडा, जंगली भैंसा, हिरण आदि जैसे बड़े जानवरों को इन जगहों में काटा गया था। कई विद्वानों का मानना है कि ये स्थान सूझबूझ के साथ योजनाबद्ध परिष्कृत शिकार का प्रतिनिधित्व करते हैं।

फलक (Flakes)

- फलकों को दो समूहों में वर्गीकृत किया जाता हैः उप-उत्पाद और साभिप्राय फ्लेकिंग।
- फ्लेक्स का उत्पादन औज़ारों से काम करने के परिणामस्वरूप हो सकता है और ये फलक मलबे का हिस्सा होते हैं।
- क्लेक्टोनियन, लेवालोइस और मोस्तारियन जैसे तरीकों से साभिप्राय फलकों का उत्पादन किया जा सकता है, जिसका विवरण इस भाग में आगे किया गया है।

चित्र 3.2: एक एश्युलियन हस्त-कुल्हाड़ी के विभिन्न पक्ष. फ्रांस के हॉट-गारोन से प्राप्त, 500,000 और 300,000 बी पी

साभार: डिडिएर देस्कौएन्स, 2010

स्रोत: https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/8/87/Biface_Cintegabelle_MHNT_PRE_2009.0.201.1_V2.jpg

एश्युलियन तकनीक का सबसे विशिष्ट औज़ार हस्त-कुल्हाड़ी, एक आँसू की बूंद के आकार का औज़ार था। औज़ार प्रौद्योगिकी में नवोंमेषों के आधार पर, एश्युलियन तकनीक को प्रारंभिक और बाद के चरण में विभाजित किया जा सकता है। ब्लैंक (blank) नामक बड़े फलकों का उत्पादन, जो हस्त-कुल्हाड़ी को आकार देने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त था, इस चरण में प्रारंभिक एश्युलियन तकनीक का एक महत्वपूर्ण नया प्रयोग था, हालांकि हस्त-कुल्हाड़ी इस चरण का एक छोटा और सुडौल औज़ार था। *होमो इरेक्टस* बेहतर शिकारी थे और हस्त-कुल्हाड़ी का उपयोग प्रक्षेप्य (projectile) के रूप में कर सकते थे। इस प्रकार, हस्त-कुल्हाड़ी को एक औज़ार के साथ-साथ एक हथियार के रूप में भी इस्तेमाल किया जा सकता था। दूसरा महत्वपूर्ण औज़ार क्लीवर (cleaver; मांस काटने वाला बड़ा चाकू) था, जो एक छोर पर सीधे कटे किनारों वाला एक बड़ा फलक था। इन औज़ारों का पुनः उपयोग किया जा सकता था, इन्हें पुनः तेज किया जा सकता था और एक फलक औज़ार के रूप में इनका पुनर्नवीनीकरण किया जा सकता था। इन औज़ारों के उत्पादन के लिए पत्थरों के अलावा लकड़ी, बारहसिंगे के सींग और हड्डियों का इस्तेमाल भी किया जाता था। आहार में मांस के शामिल होने से अन्य सामाजिक परिवर्तन भी हुए जैसे समूह का गठन और पृथक औज़ार किट का निर्माण। खुरचनी, क्लीवर, सतह-खुरचनी, बोला (bola) पत्थर और अन्य सरल लेकिन कुशल औज़ार उत्पादित किए गए।

चित्र 3.3: क्लैक्टोनियन हस्त-कुल्हाड़ी, लगभग 350,000 बी सी ई तथा रिकसन फार्म के गड्ढ़ों से उत्खनित, यूनाइटेड किंगडम

साभार: बेल्लरोथ, 2010

स्रोत: https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/6/6e/Hand-axe-Clactonian.JPG

एश्युलियन प्रौद्योगिकी के बाद के चरण में, उद्यत कोर (core) तकनीक का उपयोग करके औज़ारों का उत्पादन किया जाने लगा, यानी, पहले कोर को तराशा जाता था और उसके बाद वांछित औज़ार का उत्पादन करने के लिए फलक का उत्पादन किया जाता था। क्लैक्टोनियन (clectonian) तकनीक निम्न पुरापाषाण तकनीक से जुड़ा एक विशिष्ट पाषाण संयोजन है जिसका नामकरण क्लेक्टन-ऑन-सी (एसेक्स, इंग्लैंड) नामक स्थान के आधार पर किया गया है। हेनरी ब्रुइल के वर्गीकरण के अनुसार (ओहेल, 1978 में उद्धृत) ये औज़ार बड़े, चौड़े और मोटे फलकों से ब्लाक-ऑन-ब्लाक (खंड-दर-खंड) पद्धति द्वारा निर्मित थे। इन्हें एश्युलियन औज़ारों से अलग माना जाता था। हालांकि, आजकल कई विद्वान जैसे ओहेल और अन्य विद्वान क्लैक्टोनियन तकनीक को एक अलग औज़ार प्रौद्योगिकी के रूप में नहीं बल्कि फ्लेकिंग प्रक्रिया के ही एक हिस्से के रूप में देखते हैं। इस विधि को कभी-कभी हस्त-कुल्हाड़ी रहित निम्न पुरापाषाणिक औज़ार संस्कृति के रूप में भी समझा जाता है। कई विद्वान इस विधि को लेवालोईस (Levallois) तकनीक के अग्रदूत के रूप में भी मानते हैं।

होमो इरेक्टस अफ्रीका से बाहर निकलने वाला पहला समूह था जिससे उनकी अपने को परिस्थितियों के अनुकूल ढाल लेने की क्षमता फिर से प्रतिबिंबित होती है। वे पूर्वी अफ्रीका में सवाना से जावा, उत्तरी अफ्रीका, यूरोप, एशिया इत्यादि की दुर्गम जलवायु के अनुसार खुद को ढाल सकते थे। वे आग को नियंत्रित करने की क्षमता से भी वाकिफ़ थे। दक्षिण अफ्रीका की वंडरवर्क गुफा से 18 लाख वर्ष पहले की भट्ठी की तरह की व्यवस्था के सबसे पुराने सबूतों की खोज की गई है। स्वार्तक्रान (दक्षिण अफ्रीका) और चेसोवान्या (रिफ्ट वैली, केन्या) जैसी अन्य जगहें भी राख और हड्डी के टुकड़ों के साथ नियंत्रित आग के लगातार उपयोग को दर्शाती हैं। इसी तरह, इज़राइल में गेशर बेनोट-यागोव में 790,000 साल पहले की जली हुई लकड़ी और बीज के प्रमाण मिलते हैं। बीजिंग, चीन की झोउकौडियन गुफाओं में, 400,000 साल पहले के लकड़ी के कोयले, जले हुए हड्डी के टुकड़े और भट्ठी में राख संचय का प्रमाण इंगित करता है कि होमिनिड्स आग का उपयोग करते थे। उन्होंने क्वार्ट्ज से फलक बनाना भी सीख लिया था। वे गंड़ासे, खुरचनी, सुआ और अन्य कलाकृतियों का निर्माण भी करते थे।

निम्न पुरापाषाण काल का जीवन निर्वाह शिकार, संमार्जन (scavenging) के साथ-साथ पौधों द्वारा भोजन को इकट्ठा करने पर आधारित था। वे शायद अब मौसम की बेहतर समझ रखते थे। वे बड़े झुंड में रहते थे और कभी-कभी जब प्रचुर मात्रा में शाकाहारी खाद्य सामग्री उपलब्ध होती थी तो वे छोटे झुंडों में भी रहते थे। यह उनकी सामाजिक प्रज्ञता और लचीलेपन को प्रतिबिंबित करता है। उनके पास एक पूर्ण विकसित ब्रोका क्षेत्र (आमतौर पर होमिनिड मस्तिष्क के बाईं तरफ का अधिक प्रबल क्षेत्र जो वाक शक्ति या बातचीत करने की क्षमता से जुड़ा है) था। इसलिए, इस सबूत के आधार पर यह अनुमान लगाया जाता है कि होमिनिड्स में स्पष्ट वाक् क्षमता रही होगी। इशारों और गुर्राहटों के सहारे संचार के अलावा भाषा के विकास ने मस्तिष्क के विकास को प्रोत्साहन दिया।

निम्न पुरापाषाण संस्कृति सरल ओल्डोवान औज़ारों को अधिक जटिल एश्युलियन औज़ारों में बदलने की विकासवादी प्रक्रियाओं को प्रतिबिंबित करती है। परिवर्तनों को जीवन निर्वाह के पैटर्न, आग पर नियंत्रण, समूह संरचना और भाषा के अनुकूलन के संदर्भ में देखा जा सकता है।

बोध प्रश्न-1

1) निम्न पुरापाषाण काल की जीवन निर्वाह रणनीतियों पर चर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) ओल्डोवान औज़ार तकनीकी पर एक संक्षिप्त नोट लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) *होमो इरेक्टस* से जुड़े सांस्कृतिक परिवर्तन क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

3.3.3 मध्य पुरापाषाण संस्कृतियाँ

मध्य पुरापाषाण काल (लगभग 78,000 से 128,000 साल पूर्व) एक नई औज़ार तकनीकी, जीवन निर्वाह रणनीति के नए रूपों के साथ-साथ होमिनिड्स की दूसरी प्रजाति, निएंडरथलों से संबंधित था। निएंडरथल एक विशिष्ट औज़ार किट यानि मौस्तारी औज़ारों से जुड़े थे। मौस्तारी औज़ार दो प्रमुख तरीकों से बने थेः लेवालोइस (Lavallois) विधि और डिस्क कोर (disc core) तकनीक। इस तकनीक में, कोर को तराशा जाता है और फिर पूर्व निर्धारित आकार और प्रकार के फलक काटे जाते हैं। इस प्रकार, औज़ार बहुत तेज और साथ ही आकार में छोटे होते हैं। कोर धीरे-धीरे छोटा होता जाता है और समतल चकली (Flat disk) का उपयोग नोक बनाने और खुरचनी के लिए किया जा सकता है।

लेवालोइस तकनीक को छंटनी करने की विधि के रूप में समझा जाता है जो बड़े फलकों, आमतौर पर आकार में अंडाकार और तीव्र-कोण वाले, तेज़, उपयोगी किनारों को बनाने के लिए किया जाता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इस विधि का उपयोग कोर से हटाने से पहले अंतिम उत्पाद के आकार को पूर्व निर्धारित करने के लिए किया जाता था। इस विधि का इस्तेमाल विभिन्न प्रकार के फलकों, जैसे कि उप-गोलाकार फलक, ब्लेड, ब्लेड-जैसे फलकों इत्यादि के उत्पादन के लिए किया जाता था।

चित्र 3.4: फ्रांस के ब्यूजविले में पाया गया लेवालोइस नोकधार औज़ार
साभार: डिडिएर देस्कौएन्स, 2010
स्रोत: https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/c/cf/Pointe_levallois_Beuzeville_MHNT_PRE.2009.0.203.2.fond.jpg

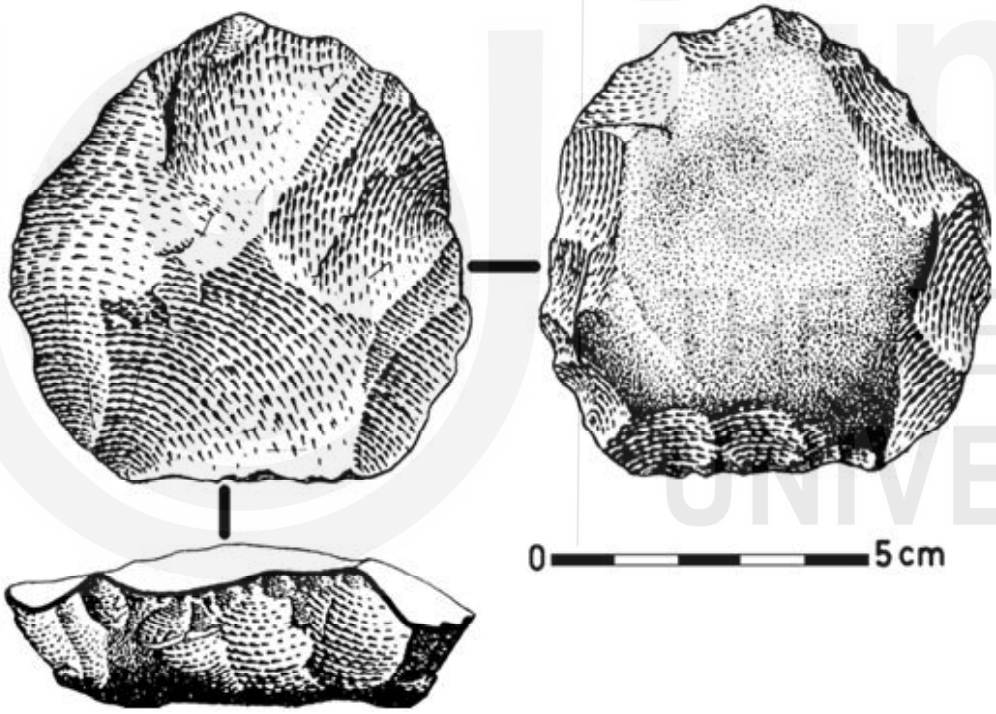

चित्र 3.5: लेवालोइस तकनीक
साभार: जोस-मैन्युअल बेनीरो अलवारेज
स्रोत: https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Levallois-Nucleo_reiterativo.png

इस अवधि तक संयुक्त औज़ारों का उत्पादन किया जाने लगा था। मौस्तारी औज़ारों में सांस्कृतिक परिवर्तनशीलता दिखाई देती है, जिसका नाम ले मौस्तार (दक्षिणपश्चिम फ्रांस) के नाम पर रखा गया है। ये ज्यादातर फलक औज़ार थे, जिनमें सबसे आम औज़ार खुरचनी, तक्षणी और भाले की नोक, हस्त-कुल्हाड़ी के अलावा, नुकीले फलक थे जिनका इस्तेमाल मांस को अलग करने के लिए किया जाता था। उदाहरण के लिए, एक भाला, नोक और डंठल को एक साथ जोड़कर बनाया गया था। इसने निएंडरथलों को एक बेहतर शिकारी बना दिया। मौस्तारी तकनीक में बड़ी विविधता है जो विद्वानों के बीच बहस का विषय रहा है। पी. बोर्डिस (1961) के अनुसार, इन भिन्नताओं में अलग-अलग समयाविधि, और परिवर्तनीय जलवायु या मौसम परिलक्षित होते हैं। लुईस और सैली बिनफोर्ड (1966) का मानना है कि

औज़ारों की परिवर्तनशीलता निएंडरथलों द्वारा किए गए विभिन्न कार्यों का प्रतिनिधित्व करती है, जो अभी तक अस्पष्ट हैं। पत्थर की नोक वाली भाला जैसी कलाकृतियाँ बहुउद्देशीय नहीं थीं, बल्कि इनका इस्तेमाल विशिष्ट उद्देश्यों के लिए किया जाता था।

निएंडरथलों ने मौसमी दौरों द्वारा एक बड़े क्षेत्र पर अपना दख़ल जमा लिया था जहाँ वे हर वर्ष वापस आते थे। वे अपने स्थानीय पर्यावरण को अच्छी तरह से जानते थे और तदनुसार प्रवासन की योजना बनाते थे। वे गुफाओं और चट्टानों के नीचे आश्रय लेते थे। वे अच्छे शिकारी थे और विशाल जानवरों जैसे मैमथ (हाथियों की एक विलुप्त प्रजाति), हिरण, पक्षियों के अलावा जंगली घोड़ों और मछलियों का शिकार करते थे।

निएंडरथलों से जुड़ी एक और महत्वपूर्ण जटिलता उनकी धार्मिक मान्यतायें थीं। कई विद्वानों का मानना है कि निएंडरथल अपने मृतकों को दफनाते थे। चट्टानों और गुफाओं के साथ-साथ खुली जगहों में भी कब्रें पाई गई हैं। एकल कब्र अधिक आम थीं और इसमें चकमक पत्थर (flint) के औज़ार और खाद्य/मांस भी दफ़न थे। इस तरह की कब्रें इराक के ज़ाग्रोस पहाड़ों की शनीदार गुफाओं में पाई गई हैं। फ्रांस में एक और स्थल ला चैपल-ऑक्स सेंट्स है जहाँ ऐसी कब्रों के सबूत मिलते हैं जहां मृतक, छाती पर जंगली-भैंसे के पैर, हड्डी के औज़ारों और अन्य मलबों के साथ दफनाये गए हैं। कई विद्वानों का मानना है कि ऐसा परिस्थितिवश हुआ और ये जानबूझकर दफन नहीं किये गए हैं। फ्रांस में ले आइज़ियों में एक चट्टान आश्रय ला फेरासी में दो वयस्कों और चार बच्चों को एक शिविर में एक साथ दफनाये जाने के सबूत मिलते हैं। फेगन (2014) का कहना है कि हालांकि निएंडरथल अपने मृतकों को दफनाते थे लेकिन मृत्युपरान्त जीवन की अवधारणा के साथ इसे जोड़ना संदेहात्मक है।

मध्य पुरापाषाण काल में न केवल बेहतर औज़ार और जटिल शिकार रणनीतियों के संदर्भ में बल्कि सामाजिक और पर्यावरणीय अनुकूली रणनीतियों के संदर्भ में भी बदलाव आया। इसके अलावा हमारे पास दफन की प्रथाओं के संदर्भ में कुछ अनुष्ठानों के सबूत मिलते हैं जो प्रारंभिक मनुष्यों को अन्य जानवरों से अलग करते हैं।

बोध प्रश्न-2

1) आप निम्न और मध्य पुरापाषाण संस्कृतियों में कैसे अंतर करेंगे?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) निएंडरथल और उनकी संस्कृति पर चर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3.3.4 उत्तर पुरापाषाण संस्कृतियाँ

अभी तक ज्ञात पूर्ण विकसित मानव प्रजाति क्रो-मेगनॉन है जिसका नामकरण दक्षिण पश्चिम फ्रांस के ले आइजियों के शैलाश्रय के नाम पर किया गया है। वे दक्षिण पश्चिम और मध्य यूरोप में 40,000 वर्ष पूर्व आकर बसे थे और 35,000-40,000 वर्ष पूर्व दक्षिण पश्चिम फ्रांस में प्रविष्ट हुए। उत्तर पुरापाषाण काल की औज़ार तकनीकी ब्लेड तकनीकी के रूप में जानी जाती है। क्रो-मेगनॉन द्वारा पैने लम्बे समानान्तर सहायक रिक्त स्थानों का निर्माण किया गया जिनका प्रयोग अन्य कार्यों के अतिरिक्त शिकार, चीर-फाड़ करने, त्वचा के प्रक्रमण (processing), लकड़ी के काम अथवा वस्त्र उत्पादन आदि विभिन्न प्रकार के क्रियाकलापों के लिए विस्तृत श्रेणी की कलाकृतियों के निर्माण में किया जाता था। ब्लेड के औज़ार उपयोगी औज़ार थे जैसे खुरचनी, सुआ, चाकू, छिद्रित सुई वाले तक्षण, आदि। औज़ार हड्डियों, पत्थरों तथा हाथीदांत के भी बने होते थे। चकमक, चर्ट (chert) अथवा लावा कांच (obsidian) का प्रयोग आमतौर पर औज़ारों के उत्पादन में किया जाता था। उन्होंने तक्षणी, जो कि एक उत्कीर्णक (engraving) औज़ार था तथा जिसने बाहरसिंगों के सींगों और हड्डियों पर कार्य की दक्षता में योगदान दिया, का परिशोधन किया। हड्डियों तथा बारहसिंगों के सींगों से औज़ार बनाने की तकनीक खांचा और खपच्ची (groove and splinter) तकनीकी के नाम से जानी जाती थी।

इस काल की अर्थव्यवस्था संग्रहण तथा आखेटक की थी, जिसमें मछली पकड़ना भी शामिल था। पश्चिम तथा मध्य यूरोप के क्रो-मेगनॉनों ने अधिक विस्तृत तथा परिष्कृत आखेटक सभ्यता का विकास किया। ये सभ्यतायें न केवल औज़ारों के अर्थ में भिन्न थीं, बल्कि सामाजिक तथा धार्मिक जीवन के संदर्भ में भी इनमें भिन्नता थी। इन क्षेत्रों के क्रो-मेगनॉनों ने नदी घाटियों की ओर प्रवास किया। उन्होंने पेड़-पौधों से खाद्य पदार्थ संग्रहण के अतिरिक्त बड़े जानवरों, बल्कि छोटे जानवरों, जैसे खरगोश, भेड़िये, पक्षियों, इत्यादि का भी शिकार किया। जैसा कि फेगन वर्णित करते हैं कि वे ज्यादातर छोटे समूहों में रहते थे तथा जीवन निर्वाह के लिए विभिन्न पशुओं के शिकार तथा संग्रहित खाद्य पदार्थों पर निर्भर थे तथा पुनः वे बसंत, गर्मी तथा प्रारम्भिक पतझड़ के मौसम में बड़े समूह में एकत्रित हो जाते थे जब रेंडियर प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होते थे। जाड़े के मौसम में वे फिर छोटे-छोटे समूहों में विभिन्न दिशाओं में बिखर जाते थे।

कुछ उत्तर पुरापाषाण संस्कृतियाँ

उत्तर पुरापाषाण काल की प्रमुख संस्कृतियों में से एक **चेटेलपरोनियन संस्कृति** है जो पश्चिमी यूरोप में प्रभावशाली थी और लगभग 35,000-30,000 बी पी में फली-फूली। यह संस्कृति ब्लेड बनाने के लिए जानी जाती है। सबसे आम औज़ारों में तक्षणी फ़लक-खुरचनी, चाकू, छेनी इत्यादि के अलावा, दांतेदार औज़ार (पत्थर के औज़ार जिनमें एक या अधिक किनारे होते हैं), नोकदार औज़ार (points) थे। इस संस्कृति का विशिष्ट औज़ार एक ब्लेड से बना हुआ चेटेलपरोनियन चाकू था, जिसका एक किनारा धारदार, जबकि दूसरा किनारा घुमावदार या कुंद था। इस संस्कृति के लोगों ने हड्डी के औज़ार भी बनाए। उनकी आवास संरचनायें बहुत अच्छी तरह से व्यवस्थित थीं। अधिकांशतः आवास कैल्सरस ब्लॉक (यानी अधिक कैल्शियम कार्बोनेट युक्त मिट्टी) के साथ गोलाकार होते थे, जो सिगड़ी (hearth) के आसपास स्तम्भ-छिद्र या जमीन पर गड़े हुए विशाल गजदंत के साथ बनाये जाते थे।

इस अवधि की एक और महत्वपूर्ण संस्कृति **पत्तीरूपी नोक संस्कृति** (Leaf-shaped Point Culture) है। यह संस्कृति ब्रिटेन और रूस में कुछ स्थानों पर पहले की संस्कृतियों के समकालीन ही थी। चेटेलपरोनियनों की तरह, इस संस्कृति के लोगों ने भी चाकू बनाये थे लेकिन वे एक पर्ण या पत्ते के आकार के थे, जिसके आधार पर इस संस्कृति का नामकरण

हुआ। इस संस्कृति की एक महत्वपूर्ण बस्ती ले-कॉटे, फ्रांस में है। इस संस्कृति को महत्वपूर्ण माना जाता था क्योंकि इसका विकास मध्य यूरोप में ग्रेवेटियन स्थलों (उत्तर पुरापाषाण के अंतिम पुरातात्विक उद्योग) के गठन के कारण हुआ था।

हालांकि, ग्रेवेटियन संस्कृति से पहले **ऑरिग्नेसिअन संस्कृति** थी जिसका काल निर्धारण पश्चिम एशिया में लगभग 40,000 बी पी में किया जा सकता है। यह क्रो-मैगनॉन मानवों की संस्कृति मानी जाती है। इस औज़ार संस्कृति को चोंचदार तक्षणी, चपटी पेंदी वाली खुरचनी, और छोर खुरचनी के अलावा हड्डी के औज़ारों की कई किस्मों के द्वारा दर्शाया जाता है। इस संस्कृति में छिद्रित दांतों के अलावा पेंडेंट (pendent), हाथीदांत के बने मनके, बूंद के आकार के पेंडेंट और अंगूठियों जैसे गहनों के साक्ष्य भी मिलते हैं। इसके अलावा, हाथीदांत से बनी चीजों के साक्ष्य स्वैबियन जुरा, जर्मनी की गुफाओं में पाए गए हैं जहां आमतौर पर जानवरों को गोलाकार रूप में चित्रित किया गया है। अन्य जगहों पर भी चट्टानों के नीचे बने आश्रय तथा इनमें जानवरों और मनुष्यों का प्रतिनिधित्व करने वाली नक्काशी के नमूने पाए गए हैं। ले-आइज़ीज़, डॉर्डोग्न, फ्रांस में एक क्रो-मैगनॉन आश्रय में एक सामूहिक कब्र भी पाई गई है।

27,000-22,000 बी पी के बीच, **ग्रेवेटियन संस्कृति** को बारीक़ या महीन ब्लेडों के लिए जाना जाता है, जिसे ग्रेवेटियन नोक (points) कहा जाता है। वे कांटों और चपटी पत्ती के आकार वाले बर्छी का भी इस्तेमाल करते थे। कलछी, कुदाली (picks), कुल्हाड़ी (picke) जैसे अन्य औज़ारों का इस्तेमाल आवास संरचनाओं के निर्माण के लिए किया जाता था। वे हड्डियों और बारहसिंघे के सींग दोनों का इस्तेमाल औज़ार बनाने के लिए कच्चे माल के रूप में करते थे। गोलाकार आवास क्रबों और मूर्तियों के निर्माण से सम्बंधित खुले इलाकों के साथ पाए गए हैं। यह दर्शाता है कि ये स्थायी आवास रहे होंगे जिनमें प्राकृतिक आश्रय और खुले मैदान शामिल थे।

ग्रेवेटियन विशेष रूप से 'वीनस मूर्तियों' के लिए जाने जाते थे। ये व्यापक नितम्बों, लटके हुए स्तनों और बड़े कूल्हों वाली महिलाओं की मूर्तियां थीं। हाथ-पैर अधिकतर टूटे हुए थे, और इन मूर्तियों के चेहरों में कोई विशेषताएं नहीं थीं। डोलनी वेस्टोनिस, मोराविया, चेक गणराज्य में मूर्तियों को नरम पत्थरों, हाथीदांत या टेराकोटा से बनाया जाता था। मोराविया के साथ-साथ यूक्रेन में स्त्रियों की मूर्तियों के अलावा, गैंडा, मैमोथ (विशालकाय हाथियों की प्राचीन प्रजाति) आदि जानवरों की मूर्तियां भी पाई गईं हैं। ऐसा माना जाता है कि ये मूर्तियां सांस्कृतिक या धार्मिक प्रथाओं के लिए उपयोग में लाई जाती थीं।

लगभग 20,000-15,000 बी पी की **सोल्यूट्रियन संस्कृति** ज्यादातर फ्रांस और स्पेन में पाई जाती है, जो संभवतः अपने से पहले की ग्रेवेटियन संस्कृति का विस्तार थी। इस संस्कृति ने हड्डियों से विभिन्न प्रकार की नोकों (points), कांटें (barbs), सुईयों, छेद वाली सुइयों का उत्पादन किया। उनकी अर्द्धगोलाकार आवासीय संरचनाएं थीं और यहां गुफा चित्रों और नक्काशी के सबूत भी मिलते हैं। सोल्यूट्रियन बस्तियों के ब्लॉक्स पर की गई नक्काशी तुंदिल, छोटे पैरों वाले जानवरों का प्रतिनिधित्व करती है। इस संस्कृति का जल्द ही पराभव हो गया और इसने पश्चिम यूरोप में मेग्दालेनियन संस्कृति के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

मेग्दालेनियन संस्कृति को कालानुक्रम में लगभग 18,000-8,000 बी पी निर्धारित किया जा सकता है। यह संस्कृति जटिल बस्तियों के निर्माण के लिए जानी जाती है। इस संस्कृति के लोगों ने भी संयुक्त औज़ार जैसे **सूक्ष्मपाषाण प्रक्षेप्य** (projectile), धनुष, कांटेदार बर्छी और लघु ब्लेड (bladelets) बनाना सीख लिया था। यह संस्कृति अपनी कलात्मक उपलब्धियों, विशेष रूप से गुफा कला के लिए भी जानी जाती है, जिस पर अगले उप-भाग में चर्चा की गई है।

लेकिन इससे पहले कि हम उस पर जाएं, यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि अब तक उत्तर

पुरापाषाण काल औज़ारों, आवास संरचनाओं, शिकार रणनीतियों आदि के संदर्भ में क्षेत्रीय विविधताओं द्वारा पहचाना गया। अब हम उत्तर पुरापाषाण संस्कृतियों के विकास को उनकी कलात्मक सक्रियता द्वारा चिह्नित कर बारी-बारी से समझेंगे।

3.3.5 कलात्मक अभिव्यक्तियां

48,000 साल पहले यूरोपियों ने गुफा की दीवारों पर चित्र बनाने के अलावा मनके, पेंडेंट (pendants), छिद्रित दांत, इत्यादि जैसे गहने बनाने की कला भी सीख ली थी। पूर्व-ऐतिहासिक कला की दो प्रमुख किस्में हैं: विचल (mobilier) और पार्श्विक (parietal)। गतिशील वस्तुओं पर निष्पादित सजावट या कला कार्य या जिसे एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जा सकता है उसे विचल कला या गृह कला कहा जाता है। गुफा की दीवारों और छत में पाई जाने वाली कला को गुफा कला या पार्श्विक कला कहा जाता है। इसके अलावा, प्रागैतिहासिक कला विभिन्न रूपों जैसे नक्काशी, चित्रकला, उभरी हुई नक्काशी (bas-relief) इत्यादि में नजर आती है और कला के इन सभी रूपों को उत्तर पुरापाषाण कला के रूप में देखा जा सकता है। कलात्मक अभिव्यक्ति का एक अन्य महत्वपूर्ण रूप धारी या रेखाओं द्वारा अलंकरण (flutting) था, जिसमें गुफा की दीवारों पर टेढ़ी-मेढ़ी लकीरों के चिन्ह अंकित होते थे। विद्वानों का मानना था कि ये बच्चों द्वारा बनाए गए थे लेकिन वयस्कों द्वारा समर्थित थे क्योंकि ये दीवारों पर काफी ऊंचाई पर पाए गए हैं। यह माना जाता है कि इन कला रूपों की सादगी के आधार पर इन्हें बच्चों को सौंपा गया था। हालांकि विद्वानों का यह भी मानना है कि इस तरह के कला रूपों के कुछ अनुष्ठानिक उद्देश्य भी हो सकते हैं।

चित्रकला संज्ञानात्मक क्षमता और प्रागैतिहासिक मानव की अधिक भावनात्मक शक्ति को दर्शाती है, जिसके कारण इसे संचार के एक तरीके के रूप में समझा गया था। ऐसा माना जाता था कि वे प्रतीकात्मक अर्थों का प्रतिनिधित्व करते हैं जिन्हें समझना मुश्किल है। यह एक ही निरंतरता में अपने सामाजिक, आध्यात्मिक और प्राकृतिक संसारों की गहरी समझ का प्रतिनिधित्व करता है (फेगन, 2014)।

पुरापाषाण कला पत्थर, हड्डी, बारहसिंगे के सींग, लकड़ी, मिट्टी, और हाथीदांत पर निष्पादित की जाती थी। कला में 'वीनस मूर्तियों' के चित्रण, पेंडेंट और मनके जैसे गहने और जर्मनी में पाई जाने वाले बांसुरी जैसे संगीत वाद्ययंत्र शामिल हैं। मैग्डालेनियन कांटेदार बर्छी, भालों को अन्य प्राकृतिक नक्काशियों द्वारा भी सजाते थे। स्टीफन मिथेन (1995) का मानना है कि उच्च संज्ञानात्मक क्षमता के दो प्रमुख परिणाम हुए हैं, पहला जटिल सामाजिक संबंध और दृश्य प्रतीकात्मकता और दूसरा विकास, यानी संचार और अभिव्यक्ति के साधन के रूप में कला का विकास।

शैल चित्रण कला

सबसे मशहूर उत्तर पुरापाषाण गुफा कला लस्कॉक्स (दक्षिण पश्चिम फ्रांस), ले कैम्बरेल्स (ले-आइज़िस डे टेयॉक, डॉरडोग्न, फ्रांस), अल्तामीरा (कैंटाब्रिया, स्पेन), और ग्रोत डी शॉवेट, फ्रांस आदि स्थानों पर पाई गई हैं। इन स्थानों की गुफा कला आमतौर पर पशुओं के रूपांकन, मानव आकृतियों, अवताररूपी मानवों (जैसे मानव-पशु रूपों) के चित्रों को दर्शाती है। वे अमूर्त और गैर-प्रकृतिवादी संकेतों का भी प्रतिनिधित्व करते हैं, जिन्हें आमतौर पर तंबूरूप (tectiform) कहा जाता है। इस कला को दीवार पर चित्रित किया गया था या चट्टान की दीवार के प्राकृतिक आकार पर चित्रित किया गया था। नक्काशी और उभार वाले चित्रों (bas-relief) को गुफा के नजदीक और आसपास पाए गए मिट्टी और पत्थर के स्लैब में भी दोहराया गया था। चित्र स्वाभाविक रूप से पाए जाने वाले गेरू, खनिज ऑक्साइड, इत्यादि को पीसकर और जानवरों के खून और मूत्र, पानी आदि जैसी अन्य सामग्रियों के साथ पीसकर तैयार किए गए वर्णक के उपयोग से बनाये जाते थे। चित्र की रूपरेखा तैयार करने के लिए काले, लाल और कभी-कभी पीले रंग के रंगों का मिश्रित या अलग-अलग इस्तेमाल

किया जाता था। फ्रांस के ग्रोट डी शॉवेट में, लगभग 30,000 बी सी ई पुराने तीन सौ से अधिक चित्र पाए गए हैं। भागते हुए जानवरों के सरों का अतिव्यापी (overlapping) चित्रण चित्रकला में गतिशीलता का आभास देते हैं।

लगभग 16,000 बी सी ई पुराने दक्षिण पश्चिम फ्रांस में मैग्डालेनियन स्थलों जैसे लेस्कॉक्स के चित्रों में जंगली घोड़ों, बैलों, रेंडियर और अन्य जानवरों को दर्शाया गया है। इन चित्रों के लिए उपयोग किए जाने वाले रंग खनिजों से प्राप्त किए गए थे और सबसे आम हेमेटाइट, अर्थात लाल रंग था। इसके अलावा, प्राकृतिक या प्रज्वलित मैंगनीज, मिट्टी और चारकोल में मिश्रित रक्त या पशु मज्जा या वसा को भी रंगीन घटकों के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। प्रारंभिक मानव ने अपनी उंगलियों का उपयोग करने के अलावा पंखों, टहनियों और बालों को ब्रश या कूँची के रूप में इस्तेमाल किया। वे ज्यादातर चट्टान की प्राकृतिक सतह पर चित्र बनाते थे। वे आमतौर पर सादा और चिकनी सतह पसंद करते थे, लेकिन यह सतह को चुनने का एकमात्र मानदंड नहीं था क्योंकि वे ऊंचाई पर, छतों पर और गहरी अंदरूनी गुफाओं पर भी चित्र बनाते थे। जानवरों के शरीर को आमतौर पर खाली छोड़ दिया जाता था और चित्र छोटे से लेकर बहुत बड़े आकार के होते थे।

चित्र 3.6: अल्तामीरा गुफाओं की चित्रकला
साभार: मूसियो दे अल्तामीरा वाई डी. रोड्रिगुएज़, 2010
स्रोत: https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/8/8b/9_Bisonte_Magdaleniense_polícromo.jpg

विद्वानों के पास इन कला रूपों के पीछे बनाए जाने के उद्देश्य के संबंध में सर्वसम्मतिपूर्ण विचार नहीं हैं। कुछ विद्वानों का मानना है कि ये कला रूप अनुष्ठानिक विश्वास का प्रतिनिधित्व करते हैं। अन्य लोग तर्क देते हैं कि वे सौंदर्य उद्देश्य के लिए बने थे। जबकि कुछ अन्य विद्वान पुरापाषाण गुफाओं की कला को जादू-टोने के साथ जोड़ते हैं। गॉर्डन चाइल्ड जैसे विद्वानों ने तर्क दिया कि ये शौकिया कला नहीं थी, बल्कि इन्हें कलात्मक ढंग से बनाया गया था तथा इन प्रारंभिक समाजों में ऐसे विशेषज्ञ अवश्य रहे होंगे जिन्होंने ऐसी पेंटिंग की हो। इससे सवाल उठता है कि निर्वाह अर्थव्यवस्था पर आधारित इस समाज ने इतनी मुश्किल पहुँच वाली इन गुफाओं में चित्रों को बनाने में समय और ऊर्जा क्यों लगाई। एच. ब्रेउल (फेगन, 2014 में उद्धृत) का मानना है कि आखेटक-संग्राहक समूह इन गुफाओं में अनुष्ठान किया करते थे और इस तरह के कार्य शिकार की सफलता सुनिश्चित करने के लिए थे। वास्तव में, लुईस-विलियम्स और डॉउसन (पालासीओ-पेरेज़, 2013 में उद्धृत) जैसे

कुछ विशेषज्ञों का तर्क है कि गुफा कला शमनवादी (आत्मा आदि में विश्वास वाले) अनुष्ठानों से जुड़ी हुई थी और जानवरों के चित्र शमनों के लिए प्राणियों की आत्मा या जीवन शक्ति की छवियां थीं। इन विचारों के विपरीत, कई विद्वानों का मानना है कि गुफा कला केवल प्रारंभिक मनुष्यों की दुनिया का प्रतिनिधित्व करती है। उन्हें यूको और रोसेनफेल्ड (पालासिओ-पेरेज़, 2013 में उद्धृत) द्वारा टोटेमवाद (totemism) के सहानुभूतिपूर्ण जादू के रूप में भी समझा गया है। इस प्रकार पुरापाषाण कला की व्याख्या शुद्ध सौंदर्यशास्त्र से लेकर कार्यरूपी अथवा उपयोग रूपी के रूप में की गई।

बोध प्रश्न-3

1) यूरोप में उत्तर पुरापाषाण संस्कृतियों पर एक नोट लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) शैल चित्रण कला का मूल्यांकन कीजिए और बताइये कि यह उत्तर पुरापाषाण काल की जटिलता का प्रतिनिधित्व कैसे करती है।

.....

.....

.....

.....

.....

3.4 मध्यपाषाण संस्कृतियाँ

मेसोलिथिक काल शब्द का अर्थ मध्यपाषाण काल है। इसे आमतौर पर नवपाषाण काल की प्रस्तावना के रूप में समझा जाता है। इस अवधि को औज़ारों के आकार में कटौती और असाधारण जलवायु परिवर्तनों के संदर्भ में पहचाना जाता है। इस काल ने हिमयुग का अंत और गर्म अवधि की शुरुआत देखी और फिर बाद का ठंडा चरण भी देखा। गर्म अवधि में समुद्र के स्तर में वृद्धि हुई। तट, मुहाना और झील अत्यधिक उत्पादक और जलीय संसाधन क्षेत्र बन गए, अतः उनका अच्छी तरह से उपयोग किया गया (फेगन, 2014)। इन परिवर्तनों का वनस्पति के साथ-साथ जानवरों पर भी असर पड़ा, उदाहरण के लिए रोएँदार (ऊनी) मैमथ गायब हो गए और हिरण अधिक आम हो गए। भोजन के लिए गिरीदार फल वाले पौधे अधिक प्रचलित हो गए। भोजन में वृद्धि ने जनसंख्या वृद्धि में योगदान दिया होगा।

3.4.1 पर्यावरण संबंधी बदलाव

होलोसीन युग, एक भूगर्भशास्त्रीय विभाजन जो 13,700 बी पी से शुरू हुआ, में पर्यावरण संबंधी बड़े परिवर्तन देखे गए। अस्थिर और परिवर्तनशील जलवायु पुरापाषाण काल के अंत और नए लघु पाषाण औज़ारों, जिसे सूक्ष्मपाषाण कहा जाता है, के शुरुआती काल में देखी जा सकती है, जिसके साथ शिकार रणनीतियों में धनुष और बाण का इस्तेमाल और गहन संग्रहण की प्रक्रिया की शुरुआत हुई (इसकी चर्चा हम इस उप-भाग में करेंगे)। जलवायु शुष्क और बंजर होती जा रही थी और इसके साथ ही इस क्षेत्र में वनस्पतियों और जीवों में बदलाव हो रहे थे। जनसंख्या में भी वृद्धि हुई थी, जिसकी वजह से दो प्रकार के बदलाव

आवश्यक हो गए थे। पहला, औज़ारों के उपयोग में परिवर्तन और दूसरा, उपलब्ध खाद्य संसाधनों के उपयोग में परिवर्तन।

फ्रांस के नजदीक, मा दे'अज़िल की गुफाओं की खोज के साथ मध्यपाषाण काल को एक विशिष्ट सांस्कृतिक काल के रूप में पहचाना जाने लगा। इन जगहों पर उत्तर पुरापाषाण काल के मैग्देनियन औज़ारों की जगह मध्यपाषाण औज़ार पाए गए और इस खोज के साथ यूरोप में एक विशिष्ट चरण की पहचान हुई। मध्यपाषाण काल को अक्सर पुरापाषाण और नवपाषाण काल के बीच की संस्कृति के रूप में परिभाषित किया जाता है।

डी. प्राइस (1991) के अनुसार मध्यपाषाण काल केवल सूक्ष्मपाषाण औज़ारों के उपयोग या वन या तटों के शोषण या कुत्ते को पालतू बनाने से ही नहीं जुड़ा था। इसे कृषि की शुरुआत से पहले की उत्तर हिमनदीय काल के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। क्लार्क यह भी मानते हैं कि मध्यपाषाण काल अनिवार्य रूप से संस्कृति के अंत का उद्घोषक होने की बजाय संस्कृति के विकास में मौलिक परिवर्तनों की प्रस्तावना का काल था।

3.4.2 सूक्ष्मपाषाण औज़ार

इस अवधि से जुड़े औज़ारों को सूक्ष्मपाषाण औज़ार कहा जाता है। ये आकार में छोटे, धारदार और बहुत उपयोगी थे। इस अवधि में बेहतर संयुक्त औज़ारों और हथियारों के संदर्भ में विकास भी देखा गया। सूक्ष्मपाषाण औज़ार आमतौर पर ज्यामितीय रूपों में बनाये जाते थे, जैसे त्रिकोणीय और विषमबाहू आकार के, लेकिन उन्हें चंद्राकार और अन्य गैर ज्यामितीय रूपों में भी बनाया जाता था। इस अवधि में पहले की अवधि की ब्लेड तकनीकी को और संशोधित किया गया था। यह अवधि धनुष और तीरों के उपयोग से भी जुड़ी हुई है, जिसने मध्यपाषाण मानव को बेहतर शिकारी बना दिया होगा। इस अवधि को कलाकृतियों के स्थानीयकरण और नई संस्कृतियों के गठन के आधार पर चिह्नित किया गया है जैसा कि अगले उप-भाग में चर्चा की जाएगी।

चित्र 3.7: सूक्ष्मपाषाण औज़ार
साभार: यॉर्क म्यूजियम ट्रस्ट, एली कॉक्स, 2018
स्रोत: https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/d/d0/Microlith_%2C_Mesolithic_%28FindID_628327%29.jpg

मछली पकड़ना भी आमतौर पर इस अवधि के दौरान शुरू हुआ था जैसा कि औज़ार किट से देखा जा सकता है जिसमें अब कांटे (barb), बर्छी (harpoon), भाले, इत्यादि शामिल थे जो मछली पकड़ने के विशेष औज़ार थे। औज़ार पत्थर, हड्डी और लकड़ी से बने थे। चाकू, कुल्हाड़ी (axe), भाले, ब्लेड, लकड़ी के तीर जैसे अन्य औज़ार भी इस काल में पाए गए हैं। धारदार ब्लेड जोर से आघात मारने वाली (pressure flaking) तकनीक के द्वारा बनाए गए थे और इस प्रकार औज़ार समानांतर किनारों के साथ संरचना में अधिक सुडौल थे। इस अवधि तक, यूरोप के कुछ हिस्सों में मानव ने सुडौल संरचना वाले प्रक्षेप्य औज़ारों की नोक (points) बनाना सीख लिया था।

3.4.3 जीवन निर्वाह का तरीका और सामाजिक जटिलता

मध्यपाषाण अर्थव्यवस्था शिकार, संग्रहण और मछली पकड़ने पर आधारित थी। मध्यपाषाणकालीन मानव नदी के किनारे अर्द्ध-स्थायी या स्थायी बस्तियों में समूहों में रहते थे। इंग्लैंड में स्टार कैर लगभग 9500 बी पी का एक महत्वपूर्ण मध्यपाषाण स्थल है। इसके प्रमाण मिलते हैं कि इस अवधि तक मनुष्यों ने कुत्ते को पालतू बनाना या उससे मित्रता करना सीख लिया था। हालांकि मध्यपाषाण अर्थव्यवस्था में पिछली उत्तर पुरापाषाण अर्थव्यवस्था से कोई भी विशिष्ट परिवर्तन नहीं दिखाई देता।

फेगन (2014: 292) उल्लेख करते हैं कि मध्यपाषाण काल एक अनिश्चित जलवायु स्थितियों में भोजन एकत्रित करने की रणनीतियों की तीव्रता के साथ आर्थिक और सामाजिक जीवन में व्यापक भिन्नता की अवधि थी। उत्तर पुरापाषाण काल से ही मानव की नई परिस्थितियों में अनुकूलित होने की क्षमता दिखाई देती है। यह मध्यपाषाण काल के दौरान और अधिक प्रासंगिक हो गई। इन रणनीतियों में नए औज़ार शामिल थे जो समुद्री स्तनधारियों, मछली आदि जैसे जलीय संसाधनों का शिकार करने में उपयोगी थे। बिनफोर्ड (फेगन, 2014 में उद्धृत) के अनुसार मध्यपाषाण काल के दौरान मनुष्य मछली की उपलब्धता के कारण नदी घाटी के चारों ओर बस गए। जल संसाधनों की उपलब्धता ने समाजों को एक स्थान पर बसने और जनसंख्या वृद्धि की परिस्थितियों में रह-सकने की कुशलता प्रदान की। दूसरी ओर सी. गैंबल (फेगन, 2014 में उद्धृत) का मानना है कि नदी घाटियों में बदलाव जनसंख्या में वृद्धि का परिणाम था जिससे भोजन की कमी हुई और इसका सामना करने के लिए जलीय संसाधन ही एकमात्र उपाय था। मछली पकड़ने के काम में सघन श्रम लगता था और यह भू-खाद्यानों की तरह पौष्टिक भी नहीं था। डेविड यसनर (फेगन, 2014 में उद्धृत) एक अलग परिप्रेक्ष्य लेते हैं और तर्क देते हैं कि बदलते हुए पर्यावरण, आबादी का दबाव, और खाद्यानों की कमी की वजह से जलीय संसाधनों की तरफ रुख करना प्रारम्भिक मानव के लिए 'सर्वाधिक उपयोगी रणनीति' थी।

3.4.4 यूरोप में मध्यपाषाण संस्कृतियाँ

यूरोप में मध्यपाषाण काल में जलवायु परिवर्तनों और नए खाद्य संग्रह और शिकार की रणनीतियों के साथ-साथ विभिन्न औज़ार संस्कृतियों में बदलाव के परिणामस्वरूप विभिन्न नई संस्कृतियों का प्रादुर्भाव देखा जा सकता है। एज़िलियन, सॉवेटेरियन, प्रारंभिक टारडेनॉइसेन, एस्च्युरियन और लार्नियन संस्कृतियाँ पश्चिमी यूरोप में सबसे प्रमुख थीं जबकि मैग्लेमोसियन, किचन-मिडन और कैम्पेग्नियन उत्तरी यूरोप में प्रमुख थे। पश्चिमी यूरोप में मध्यपाषाण संस्कृति में घोंघा के महत्व को देखा जा सकता है। समलम्ब (Trapezoidal) लघुपाषाण औज़ार कई स्थलों पर बड़ी संख्या में पाए गए थे (गैबल, 1958)।

लगभग 10,000 बी पी की उत्तरी यूरोपीय संस्कृतियों को धनुष और तीर, कुत्ते को पालतू बनाना, डोंगी (एक संकीर्ण जल-खेवन नाव) का उपयोग और अन्य समुद्री नौकाओं के

अलावा जाल, हुक आदि मछली पकड़ने के औज़ारों से पहचाना जाता है (प्राइस, 1991)। कुल्हाड़ी, सेल्ट (celts; पत्थर से बने लंबे और पतले औज़ार), प्रक्षेप्य (हड्डी, लकड़ी, बारहसिंगों के सींग और पत्थर से बने) जैसे औज़ार उत्तरी यूरोप में लगभग 6000 बी पी में मध्यपाषाण काल के अंत में दिखाई देते हैं। यूरोप, विशेष रूप से उत्तरी यूरोप में, हिमनदीय बर्फ के पिघलने के परिणामस्वरूप समुद्र के स्तर में बदलाव देखा गया। इससे जलीय संसाधनों में वृद्धि हुई जिनका उपयोग इस अवधि के दौरान अच्छी तरह से किया गया।

3.4.5 स्कैंडिनेविया और ब्रिटेन में मध्यपाषाण संस्कृतियाँ

स्कैंडिनेविया और ब्रिटेन में अच्छी तरह से चिह्नित आबादी का दबाव और स्थायी आवास मध्यपाषाण काल की विशेषता है। तटीय गांवों से समुद्री और वन संसाधनों के शोषण के आधार पर मिश्रित अर्थव्यवस्था के साक्ष्य मिलते हैं। बाद की अवधि में लगभग 4000 बी पी तक मिट्टी के बरतन बनाने की शुरुआत हो गई थी। यहाँ की मध्यपाषाण संस्कृति को तीन कालों में बांटा जा सकता है – मैग्लेमोज, कांगमोस और एर्टेबोले।

मैग्लेमोज संस्कृति (लगभग 9500-7700 बी पी) की विशेषता आखेटक और चारागाही (भोजन की खोज में घूमने वाली) अर्थव्यवस्था के साथ नदी घाटी बस्तियाँ थीं। ज्यादातर बस्तियां ग्रीष्मकालीन झील के किनारे थीं। साक्ष्य समुद्री संसाधनों पर निर्भरता का संकेत देते हैं क्योंकि यहाँ मछलियों की बहुत सी हड्डियाँ पाई गई हैं। इस संस्कृति के लोग ज्यादातर छोटी झोपड़ियों में रहते थे जिनमें कभी-कभी कुछ में फर्श भी उनके द्वारा निर्मित किए गए थे। उदाहरण के लिए, डेनमार्क में उल्केस्ट्रप में छाल और लकड़ी के फर्श के साथ झोपड़ियाँ पाई गई हैं (फ़ेगन, 2014)।

मैग्लेमोज़नों की तरह, कांगमोस संस्कृति (लगभग 7700-6600 बी पी) भी नदी के किनारों के पास विकसित हुई। उत्तर-पश्चिम स्वीडिश तट के पास सेगेब्रो इस संस्कृति का एक प्रमुख स्थल है। इस स्थान की विशेषता विषमकोण नोक वाले तीर हैं। शिकार अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार था। कांगमोस संस्कृति के बाद एर्टेबोले संस्कृति प्रकाश में आई।

एर्टेबोले संस्कृति (लगभग 6600-5300 बी पी) हड्डी, बारहसिंगे के सींग और लकड़ी के औज़ारों के साथ एक विस्तृत औज़ार तकनीक वाली संस्कृति थी। अर्थव्यवस्था शिकार पर आधारित थी। मत्स्य पालन भी एक महत्वपूर्ण गतिविधि थी क्योंकि मछली उनके आहार का एक अभिन्न अंग था। वे कब्रिस्तान में अपने मृतकों को दफन करते थे और कब्र में शरीर को विभिन्न तरीकों से रखते थे। कभी-कभी कुत्ते को भी मानव शरीर के साथ दफनाया जाता था। दफन के तरीके कई प्रकार की सामाजिक भिन्नताओं को दर्शाते हैं। ज़ीलैण्ड (डेनमार्क का सबसे बड़ा द्वीप) और स्कैनिया (स्वीडन का दक्षिणी प्रांत) में पाए गए कब्रिस्तान सामाजिक और आनुष्ठानिक जटिलता में वृद्धि को दर्शाते हैं। दक्षिण स्कैनिया के स्केटहोम में, जहाँ 40 क़ब्रें मिली हैं, कब्रिस्तान की खुदाई में शरीरों को भिन्न तरीकों से लिटाकर दफ़न करने के और कई कब्रों में कुत्तों के साथ दफ़न करने के प्रमाण मिले हैं।

एर्टेबोले संस्कृति के औज़ारों में कुल्हाड़ी, खुरचनी, छिद्रित सींग आदि शामिल हैं। कुछ खाना पकाने के बर्तन भी पाए गए थे। इन स्थलों से मानव द्वारा तटीय और अंतर्देशीय स्थानों पर साल भर स्थायी रूप से बसावट के साक्ष्य भी मिलते हैं। उनके पास निर्वाह के कई आधार थे जिनमें घूरा शैल और पशु अवशेषों के साक्ष्य मिलते हैं।

3.4.6 दक्षिण पश्चिम एशिया में मध्यपाषाण संस्कृतियाँ

दक्षिण पश्चिम एशिया पौधों और विशेष रूप से जानवरों को पालतू बनाने वाली प्रवृति के विकास को समझने के लिए एक आकर्षक क्षेत्र रहा है। यह वह क्षेत्र है जो खाद्य उत्पादन का प्रथम स्थल बन गया। इसकी शुरुआत मध्यपाषाण काल की मुशाबियान और केबरान

संस्कृति के उद्भव के साथ हुई, जिसके बाद नातुफियान संस्कृति आई। मुशाबियान संस्कृति पूर्वी भूमध्य क्षेत्र में लगभग 14,000-12,800 बी पी के आसपास उभरी। इस संस्कृति की विशेषता ज्यामितीय सूक्ष्मपाषाण औज़ार हैं। केबरान संस्कृति (लगभग 13,500-11,500 बी पी) को कोर से ब्लेड के टुकड़ों (bladelets) को हटाकर औज़ार बनाने वाली संस्कृति के रूप में चिह्नित किया जाता है। ब्लेडलेट्स सूक्ष्मपाषाण औज़ार थे जो 4-7 मिलीमीटर से लेकर विभिन्न आकार के होते थे। अर्थव्यवस्था शिकार और संग्रहण पर आधारित थी। लगभग 13,000 बी पी में, दक्षिण-पश्चिम एशिया ने पर्यावरण और वानस्पतिक परिवर्तनों को देखा। इन स्थलों पर पत्थरों के पीसने वाले औज़ार (नवपाषाण संस्कृति की विशेषता में से एक) जैसे खल्ल और मूसल और अन्य औज़ार भी पाए गए।

नातुफियान संस्कृति, लगभग 12,500-10,200 बी पी, के स्थल लीवेंट से कृषि की शुरुआत के सबूत मिलते हैं। इसलिए इसे मध्यपाषाण और नवपाषाण चरणों के बीच संक्रमण की अवधि के रूप में देखा जाता है। इस संस्कृति को गांवों के साथ एक स्थान पर बसकर रहने वाली जीवन शैली द्वारा चिह्नित किया गया है। इस संस्कृति को सूक्ष्मपाषाण, तक्षणी, परिवेधक, खुरचनी, ब्लेड, चाकू और कुदालों द्वारा परिभाषित किया गया है। बाद में यहाँ तीर की नोकें भी पाई गईं। इसके साथ-साथ, चक्की, मूसल, ओखली और अन्य पत्थर के पीसने वाले औज़ार और पत्थर के पात्र भी पाए गए। मछली के हुक, और जाल के साक्ष्य इस संस्कृति के मानव आहार में मछली के महत्व को दर्शाते हैं। हालांकि, इस संस्कृति के लोग अभी भी शिकारी थे और खाद्य संग्रहण करते थे और सबूत दर्शाते हैं कि वे जानवरों जैसे चिंकारा (gazelle), हिरण, जंगली बकरी इत्यादि का शिकार करते थे।

अन्वेषणों के आधार पर, पुरातत्त्वविद, अन्ना बेलफ़र-कोहेन और ओफर बार-योसफ (1989) का तर्क है कि लीवेंट से प्राप्त साक्ष्य प्रारंभिक नातुफियान संस्कृति में साल भर एक ही स्थान पर बसावट को इंगित करते हैं। उनके अनुसार, यह सांस्कृतिक रूप से एक जटिल शिकारी-संग्राहक समाज था जिसमें आवास, भूमिगत भंडारण, कब्रें, चकमक (flint) कलाकृतियों, तथा पत्थर और हड्डी की कलाकृतियों को देखा जा सकता है। साक्ष्य 'आधार शिविरों' और 'मौसमी शिविरों' के मध्य अंतर दर्शाते हैं (बेलफ़र-कोहेन, 1989: 473-74)। पूर्ण बसावट और अर्द्ध-बसावट के आधार पर बस्तियों में हुए परिवर्तनों ने लीवेंट को भी परिवर्तित किया (बेलफ़र-कोहेन, 1989: 474)।

बोध प्रश्न-4

1) मध्यपाषाण संस्कृति की महत्वपूर्ण विशेषताएं क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2) मध्यपाषाण काल से जुड़े औज़ारों में प्रयुक्त तकनीकी क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

3) यूरोप में पाई जाने वाली मध्यपाषाण संस्कृतियों पर चर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

4) संक्रमण काल के रूप में दक्षिण पश्चिम एशिया में नातुफियन संस्कृति के महत्व पर चर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3.5 सारांश

पुरापाषाण और मध्यपाषाण काल प्रमुख परिवर्तनों का काल था, जिसने मानव समाज की नींव रखी। जैविक परिवर्तनों के साथ, प्रारंभिक मानव महान् सांस्कृतिक बदलाव भी ला रहे थे। सरल ओल्डोवान औज़ार बनाने की कला के साथ प्रारम्भ करके वे इतिहास के उस पड़ाव तक पहुँचे जहां उन्होंने ब्लेड के प्राथमिक रूपों का उत्पादन शुरू किया। संमार्जक (scavenger) से वे विशेषज्ञ शिकारियों के साथ-साथ संग्रहकर्ता के रूप में विकसित हुए। पर्यावरणीय परिवर्तनों को अपनाने से लेकर, नई परिस्थितियों में समायोजन करने तक, प्रारम्भिक मानव ने एक साधारण शिकार-संग्राहक-संमार्जक से खाद्य उत्पादक अर्थव्यवस्थाओं में रूपांतरण तक का अपना सफ़र तय किया। इस काल में औज़ार तकनीकी, समाज, अर्थव्यवस्था, धर्म, साथ ही सभ्यता के संदर्भ में हम जिन परिवर्तनों को देखते हैं, उन्होंने मानव विकास के अगले चरण का मार्ग प्रशस्त किया।

3.6 शब्दावली

फलक : औज़ार बनाने के लिए इस्तेमाल किए गए पत्थर के छोटे और पतले टुकड़ों की कतरनें

नैपिंग : पत्थर के मूल से फ्लेक्स हटाने की प्रक्रिया

पुरापाषाण : पत्थर के औज़ार के विकास से चिह्नित प्रागैतिहासिक काल जिसे पुरापाषाण काल कहा जाता है।

मध्यपाषाण : इसका शाब्दिक अर्थ है मध्यपाषाण का काल, यह पुरापाषाण और नवपाषाण काल के बीच का मानव प्रागैतिहासिक काल है।

सूक्ष्मपाषाण : पत्थरों के सूक्ष्म औज़ार

3.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

1) शिकार-संग्रहण और संमार्जक अर्थव्यवस्थाओं की व्याख्या करें। इस्तेमाल किए गए औज़ारों और उनके कार्यों का भी उल्लेख करें। उप-भाग 3.3.2 देखें

2) कुल्हाड़ी, चाकू जैसे सरल औज़ारों का उल्लेख करें और यह बताऐं कि शिकार के औज़ार के रूप में वे कितने उपयोगी थे। उप-भाग 3.3.2 देखें

3) औज़ारों, अग्नि के प्रयोग, भाषा आदि से संबंधित *होमो इरेक्टस* से जुड़े परिवर्तनों का उल्लेख करें। उप-भाग 3.3.2 देखें

बोध प्रश्न-2

1) औज़ारों, उनकी आयु, उनके प्रकार, उपयोग और कार्य, आर्थिक गतिविधि, सामाजिक परिवर्तनों के साथ-साथ दफनाने के संबंध में विभिन्नताओं को स्पष्ट करें। उप-भाग 3.3.2 और 3.3.3 देखें

2) मॉस्टेरियन औज़ार तकनीकी, शिकार रणनीतियों, बसावट के विभिन्न स्थलों, और दफनाने के तरीकों का उल्लेख करें। उप-भाग 3.3.2 और 3.3.3 देखें

बोध प्रश्न-3

1) औज़ारों और जीवन निर्वाह रणनीतियों के बारे में विवरण के साथ यूरोप में पाई गई संस्कृतियों का उल्लेख करें। उप-भाग 3.3.4 देखें

2) शिला चित्रों का विवरण करें: उनकी विषय वस्तु, रंग, पत्थर का चयन, इत्यादि। इन गतिविधियों से संबंधित विभिन्न व्याख्याओं पर भी चर्चा करें। उप-भाग 3.3.5 देखें

बोध प्रश्न-4

1) खाद्य की प्राप्ति, औज़ारों में परिवर्तन, जीवन निर्वाह अर्थव्यवस्था आदि के संदर्भ में विशेषताओं का उल्लेख करें। भाग 3.4 और उप-भाग 3.4.1, 3.4.2 और 3.4.3 देखें

2) मध्यपाषाण औज़ारों का संदर्भ दें: उनकी विविधता और उपयोग के बारे में बताऐं। उप-भाग 3.4.2 देखें

3) मध्य यूरोपीय और उत्तरी यूरोपीय संस्कृतियों दोनों का उल्लेख करें। उप-भाग 3.4.4 देखें

4) सांस्कृतिक विशेषताओं के साथ संक्रमण की अवधि के रूप में नातुफियनों के महत्व का उल्लेख करें। उप-भाग 3.4.6 देखें

3.8 संदर्भ ग्रंथ

आंद्रेफस्की जूनियर विलियम, 2009. 'द एनालिसिस ऑफ़ स्टोन प्रोक्योरमेंट' एंड मेन्टिनेन्स, *जर्नल ऑफ़ आर्कियोलॉजिकल रिसर्च,* भाग 17(1): 65-103.

आर्थर, कैथ्रीन डब्ल्यू, 2010. 'फेमिनिन नॉलेज एंड स्किल रिकेंसिडर्ड': विमेन एंड फ्लेकड स्टोन टूल्स', *अमेरिकन एंथ्रोपोलॉजिस्ट*, न्यू सीरीज़, भाग 112(2): 228-243.

बेलफ़र-कोहेन, अन्ना और ओफर बार-योसेफ, 1989. 'द ऑरिजिंस ऑफ़ सेडेंटिज्म एंड फार्मिंग कम्युनिटीज इन द लीवेंट', *जर्नल ऑफ प्रिहिस्ट्री*, भाग 3(4): 447-498.

बिनफोर्ड, लुईस आर. और सैली आर. बिनफोर्ड, 1966. ए प्रेलिमिनरी एनालिसिस ऑफ़ फंक्शनल वेरिअबिलिटी इन द लेवलियोइस फैंसीज़ के, *अमेरिकन एथ्रोपोलॉजिस्ट*, 68(2): 238-295.

बोर्डेस, फ्रैंकोइस, 1961. 'मॉस्तारियन कल्चर्स इन फ्रांस', *साइंस*, न्यू सीरीज, 134(3482): 803-810.

चाइल्ड, वी. गॉर्डन, 1956 1942. *व्हाट हैपनड इन हिस्ट्री*, हार्मंडवर्थः पेरेग्रीनबुकस.

चाइल्ड, वी. गॉर्डन, (1945). 'डायरेक्शनल चंजेस इन फ्यूनेररी प्रैक्टिसेज डूरिंग 50,000 इयर्स', *मैन*, 45: 13-19.

फेगन, ब्रायन एम., और नाडिया दुर्रानी, 2014. *पीपल ऑफ़ द अर्थः एन इंट्रोडक्शन टू वर्ल्ड प्रीहिस्ट्री*, 14वां संस्करण, न्यूयॉर्कः रूटलेज.

फेगन, ब्रायन एम, 2002, *वर्ल्ड प्रीहिस्ट्री ए ब्रीफ इंट्रोडक्शन*, पांचवां संस्करण. न्यू जर्सीः प्रेंटिस-हॉल.

गैबेल, डब्ल्यू. सी., 1958. 'द मेसोलिथिक कंटिन्यूयम इन वेस्टर्न यूरोप',*अमेरिकन एंथ्रोपोलॉजिस्ट* न्यू सीरीज़, भाग. 60(4): 658-667.

होडर, इयान, 2016. *स्टडीज इन ह्यूमन-थिंग एंटेगलमेंट*, ओपन एक्सेस लाइसेंस फ्रॉम क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन.

लाएट, एस.जे. डे (संपा.), ए.एच.दानी, जे.एल. लोरेन्जो गीइज़्टर और आर.बी. नूनू (सह-संपादक). 1996. *हिस्ट्री ऑफ़ ह्यूमैनिटी*, भाग 1: *प्रीहिस्ट्री एंड द बिगनिंग ऑफ़ सिविलाइज़ेशन*. यूनेस्को. लंदनः रूटलेज.

ली, रिचर्ड बी. और आई. देवोर (संपा.), 1968. *मैन द हंटर*, न्यूयॉर्कः एल्डिन डी ग्रुइटर.

मिथेन, स्टीफन, 1995. 'पेलिओलिथिक आर्किओलॉजी एंड द इवोल्यूशन ऑफ माइंड', *जर्नल ऑफ आर्कियोलॉजिकल रिसर्च*, भाग 3(4): 305-332.

ओहेल, मिला वाई, 1978., ''क्लेक्टोनियन फ्लेकिंग" एंड प्राइमरी फ्लेकिंगः सम इनिशियल ऑब्ज़र्वेंस', *लिथिक टेक्नोलॉजीस*, 7(1): 23-28.

पालासीओ-पेरेज़, ई., 2013. 'द ओरिजिंस ऑफ़ द कांसेप्ट ऑफ़ 'पेलिओलिथिक आर्ट': थियोरिटिकल रूट्स ऑफ एन आइडिया', *जर्नल ऑफ आर्कियोलोजिकल मेथड्स एंड थ्योरी*, वॉल्यूम 20(4): 682-714.

प्राइस, डगलस, 1991. 'द मेसोलिथिक ऑफ़ नॉर्दर्न यूरोप', *एनुअल रिव्यु ऑफ़ एंथ्रोपोलॉजी*, भाग 20: 211-233.

सैंडगाथ, डेनिस एम. 2004. 'अल्टरनेटिव इंटरप्रिटेशन ऑफ़ लेवलियोइस रिडक्शन तकनीक', *लिथिक टेक्नोलॉजी*, 29 (2): 147-159.

स्टाउट, डाइट्रिच, 2011, 'स्टोन टूलमेकिंग एंड द इवोल्यूशन ऑफ ह्यूमन कल्चर एंड कॉग्निशन', *फिलोसोफिकल ट्रांज़ैक्शंसः बायोलॉजिकल साइंसेज*, 366(1567): 1050-1059.

टैनर, नैन्सी और एड्रियान जिहलमैन, 1976. '*वीमेन इन इवोल्यूशन.* भाग 1: *इनोवेशन एंड सलेक्शन इन ह्यूमन ओरिजिंस, साइन्स,* 1(3): 585-608.

वेन्के, रॉबर्ट और डेबोरा आई. ओल्स्ज़वेस्की, 2006 (1980). *पैटर्न्स इन प्रीहिस्ट्रीः ह्यूमनकाइंडस फर्स्ट थ्री मिलियन इयर्स.* पांचवां संस्करण, न्यूयॉर्कः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

जिहलम, एड्रियान एल, 1978. '*वीमेन इन इवोल्यूशन,* भाग 2: *सब्सिस्टेंस एंड सोशल ऑर्गनाइजेशन अमंग अर्ली होमिनिड्स*', *साइन्स,* 4(1): 4-20.

पी डी एफः

https://www.jstor.org/stable/pdf/2949307.pdf?refreqid=search%3Af915cb64622b05eda2bd630f15cf13ea

https://www.jstor.org/stable/pdf/41492314.pdf?refreqid=search%3Af9d917af0f4d7cdaf506748db9444eed

3.9 शैक्षणिक वीडियो

हिस्ट्री डॉक्यूमैन्टरी स्टोरीज़ फ्राम द स्टोन ऐज : द हयूमन एडवेन्चर

https://in.video.search.yahoo.com/search/video?fr=spigot-nt-gcmac&p=prehistoric+tool+bbc+documentary:id=2&vid=9ce7c690f5fdd1c32adb23b72f71a334&action=click

व्हाय प्रीहिस्टॉरिक वीमेन हैड सुपर-स्ट्रांग बोन्स

https://video.nationalgeographic.com/video/171129-strong-prehistoric-women-vin-spd

मिस्ट्री ऑफ लाइफ इन द पैलिओलिथिक ऐज

https://www.youtube.com/watch?v=Tx9cuROQWlM